

## DDT स्तर में गरिबट, POP स्तर में वृद्धि

**स्रोत: डाउन टू अर्थ**

एक हालिया अध्ययन के अनुसार, कठोर अंतरराष्ट्रीय नियमों के परिणामस्वरूप वर्ष 2004 से वर्तमान तक **मानवीय आबादी एवं पर्यावरण में 11 अतिरिक्त स्थायी कार्बनिक परदूषकों (POP) के साथ डाइक्लोरो-डाइफेनिल-ट्राइक्लोरोइथेन (DDT) कीटनाशक में उल्लेखनीय कमी हुई है।**

- अन्य POP एवं समान गुणों वाले प्रतर्बिधति घातक POP के प्रतस्थापन की संख्या उच्च स्तर तक बढ़ गई है।
  - कार्बनिक यौगिक (अर्थात् कार्बन-आधारित) रासायनिक वघटन, जैविक प्रक्रियाओं एवं सूर्य के प्रकाश जैसी पर्यावरणीय प्रक्रियाओं द्वारा क्षरण का प्रतरोध करते हैं। वे पर्यावरण में दशकों एवं सदियों तक लंबे समय तक बने रह सकते हैं।
  - वे कैंसर, यकृत क्षति, प्रजनन क्षमता में कमी, तथा अस्थमा और थायरॉयड के उच्च जोखिम का कारण बन सकते हैं क्योंकि वे अंतःस्रावी तंत्र को बाधति कर सकते हैं।
- POP के लिये वैश्विक नगरानी योजना को संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) द्वारा क्रियान्वति कया गया है तथा वैश्विक पर्यावरण सुवधि (GEF) द्वारा वतितपोषति कया गया है।
- यह अध्ययन अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका एवं कैरिबियन तथा प्रशांत द्वीप समूह के 42 देशों में स्टॉकहोम अभिसमय के अंतगत वर्ष 2021 तक सूचीबद्ध 30 POP की नगरानी एवं सीमति डेटा के लिये कया गया था।
  - स्टॉकहोम अभिसमय (2001) एक अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण संधि है जो वर्ष 2004 से प्रभावी है जिसका उद्देश्य POP के उत्पादन एवं उपयोग को समाप्त करना अथवा प्रतर्बिधति करना है।
- DDT, 1940 के दशक में वकिसति पहला आधुनिक सथिटिक कीटनाशक है जो रंगहीन, स्वादहीन एवं गंधहीन यौगिक है।
  - कुछ देशों (जैसे दक्षिण अफ्रीका, नामीबिया, बोत्सवाना, ज़मिबाब्वे) में अभी भी इसका उपयोग कठोर नियमों के अंतगत मलेरिया नयितरण के लिये कया जाता है।

**और पढ़ें... मलेरिया नयितरण कार्यक्रम के लिये दक्षिण अफ्रीका को DDT की आपूर्ति**